

## भारत में सक्िका प्रणाली का वकिकास

### प्रलिमिस के लयि:

भारत में सक्िका प्रणाली, प्राचीन एवं आधुनकि भारत के सक्िके

### मेन्स के लयि:

भारत में सक्िका प्रणाली का वकिकास, प्राचीन एवं आधुनकि भारत की सक्िका प्रणाली की मुख्य वशैषताएँ

## चर्चा में क्यौं?

हाल ही में दलिली एनसीटी की सरकार ने भारत के प्रधानमंत्री से [नोटों \(मुद्रा\) पर देवी लकष्मी और भगवान गणेश के चतिर छापने का अनुरोध](#) कयि ।

- भारत में देवी-देवताओं के चतिरों के साथ सक्िके बनाने की एक लंबी परंपरा है । तीसरी शताब्दी ईसवी तक शासन करने वाले **कुषाणों** ने **सबसे पहले अपने सक्िकों पर देवी लकष्मी के चतिर** का उपयोग कयि था ।

## भारत में सक्िकों का इतहिस:

- **पंचमार्क (आहात) सक्िके:**
  - 7वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व तथा पहली शताब्दी ईसवी के बीच जारी 'पंचमार्क' सक्िकों को पहला प्रलेखति सक्िका माना जाता है ।
  - इन सक्िकों को उनकी निर्माण तकनीक के कारण 'पंचमार्क' सक्िके कहा जाता है । ये अधिकतर चांदी के हैं एवं इन पर कई प्रतीक बनें हैं, जनिमें से प्रत्येक को एक अलग पंच (ठप्पा) द्वारा बनाया गया था ।
  - **इन्हें सामान्य तौर पर दो अवधियों में वर्गीकृत कयि गया है:**
    - पहली अवधिका श्रेय जनपदों या छोटे स्थानीय राज्यों को दिया जाता है ।
    - दूसरी अवधिका श्रेय शाही मौर्य काल को जाता है ।
    - इन सक्िकों पर पाए जाने वाले रूपांकन ज़्यादातर प्रकृत जैसे सूर्य, वभिन्न जानवरों के रूपांकनों, पेड़ों, पहाड़ियों आदि से लयि गए थे ।



// Punch Marked Coin, Silver Bentbar

#### ■ राजवंशीय सक्किके:

- ये सक्किके सबसे प्राचीन **हदि-यूनानी, शक-पहलवों और कुषाणों से संबंधित हैं**। ये सक्किके आमतौर पर दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तथा दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच प्रचलन में थे।
- **हदि-यवन:**
  - **हदि-यवन के चांदी के सक्किके** हेलेनस्टिक परंपरा की विशेषता हैं, जिनमें **ग्रीक देवी-देवताओं** को प्रमुखता से चित्रित किया गया है, इसके अलावा इनमें जारी करने वालों के चित्र भी हैं।
- **शक:**
  - **पश्चिमी क्षेत्रों के शक सक्किके** शायद सबसे पुराने दिनांकित सक्किके हैं, जो 78 ईस्वी में शुरू हुये शक युग से संबंधित हैं।
  - शक युग से **भारतीय गणराज्य का आधिकारिक कैलेंडर** प्रेरित है।
- **कुषाण:**
  - मध्य एशियाई क्षेत्र के कुषाणों ने अपने सक्किके में **ओशो (शवि), चंद्र देवता मरिओ और बुद्ध** को चित्रित किया।
  - सबसे पुराने कुषाण सक्किके का श्रेय आमतौर पर **वमि कडफसिस** को दिया जाता है।
  - कुषाण सक्किकों में आमतौर पर **ग्रीक, मेसोपोटामिया, जोरोस्ट्रियन और भारतीय पौराणिक कथाओं से लिये गए प्रतीकात्मक रूपों को दर्शाया गया है**।
  - **शवि, बुद्ध और कार्तिकेय** चित्रित किये जाने वाले प्रमुख भारतीय देवता थे।



#### सातवाहन:

- उनके सत्ता में आने की तथियाँ वविदास्पद हैं और वभिन्न रूप से 270 ईसा पूर्व से 30 ईसा पूर्व के बीच रखी गई हैं।
- उनके सक्किके मुख्यतः तांबे और सीसे के थे, हालाँकि चाँदी के मुद्दों को भी जाना जाता है।
- इन सक्किकों में हाथी, शेर, बैल, घोड़े आदि जैसे जीव-जंतुओं के रूपांकन होते थे, जिनमें अक्सर प्रकृतिक रूपांकनों जैसे- पहाड़ियों, पेड़ आदि के साथ जोड़ा जाता था।
- सातवाहनों के चांदी के सक्किकों में चित्र और द्विभाषी कविदंतियाँ थीं, जो क्षेत्र प्रकारों से प्रेरित थीं।



### पश्चिमी क्षत्रपः

- सक्किों पर कविदंतयिँआमतौर पर ग्रीक में थीं और ब्राह्मी, खरोष्ठी का भी इस्तेमाल किया गया था ।
- पश्चिमी क्षत्रप के सक्किों को तारीखों वाले सबसे पुराने सक्किे माना जाता है ।
- आम तांबे के सक्किे 'बैल और पहाड़ी' तथा 'हाथी एवं पहाड़ी' प्रकार हैं ।



### गुप्तकालीन सक्किे:

- गुप्तकालीन सक्किे (चौथी-छठी शताब्दी ईस्वी) कुषाणों की परंपरा का पालन करता है, जिसमें राजा को अग्रभाग पर और एक देवता को पीछे की ओर दर्शाया गया है; देवता भारतीय थे और कविदंतयिँ ब्राह्मी में थीं ।
- सबसे पुराने गुप्तकालीन सक्किे का श्रेय समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय और कुमारगुप्त को दिया जाता है तथा उनके सक्किे अक्सर राजवंशीय उत्तराधिकार महत्त्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं, जैसे- विवाह गठबंधन, घोड़े की बलिया शाही सदस्यों की कलात्मक और व्यक्तिगत उपलब्धियों (गीतकार, धनुर्धर, सहि आदि) को दर्शाते हैं ।

दृष्टि  
The Vision

Description	Obverse	Reverse
King as Horseman		
King as Lion Slayer		

**दक्षिणी भारत के सिक्के:**

**चेर:**

Coins of the Cheras 11th - 13th Centuries		
Coins of the Cheras 11th - 13th Centuries		

**चोल:**

Coins of the Cholas 9th - 13th Centuries		
---	---	---

**उडुपी के अलुपस:**

Coins of the Alupas of Udipi  
11th - 13th Centuries



■ वदिशी सक्िके

○ यूरोपीय सक्िके:

- मद्रास प्रेसीडेंसी में बरिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने थ्री स्वामी पैगोडा के रूप में लेबल कयि गए सक्िकों को ढाला, जसिमें भगवान बालाजी को श्रीदेवी और भूदेवी के दोनों ओर दखियाया गया है ।

○ अन्य सक्िके:

- प्राचीन भारत का मध्य-पूरव, यूरोप (ग्रीस और रोम) के साथ-साथ चीन के साथ मज़बूत व्यापारिक संबंध था । यह व्यापार आंशकि रूप से रेशम मार्ग से और आंशकि रूप से समुद्री व्यापार के माध्यम से भूमि मार्ग द्वारा कयिा जाता था ।
- दक्षणि भारत में जहाँ समुद्री व्यापार ले मामले में संपन्न था, रोमन सक्िके भी अपने मूल रूप में परचालति हुए, हालाँकि कई बार वदिशी संप्रभुता की घुसपैठ के वरिोध में इनके परचालन में कटौती भी की गई ।

Roman Find in South India



Roman Find in South India



Byzantine Find in South India



## UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. आप इस वचिार को कगुप्तकालीन सक्िका शास्र्तीय कला की उत्कृष्टता का स्तर बाद के समय में देखने को नहीं मलिता, कसि प्रकार सदिध करेंगे?(2017)

स्रोत: द हद्रि